परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था, मुंबई
हिन्दी 11
विषय- निबंध
Handout
मॉड्यूल 1

हिन्दी का **'निबंध'** शब्द अँग्रेजी के **'Essay'** शब्द का अनुवाद है। अँग्रेजी का **'Essay'** शब्द **फ्रेंच 'Essai'** से बना है। **Essai** का अर्थ होता है- **To attempt** अर्थात प्रयास करना। **'Essay'** में **'Essayist'** अपने व्यक्तित्व को अभिव्यक्त करता है, अर्थात **'निबंध'** में **'निबंधकार'** अपने सहज, स्वाभाविक रूप को पाठक के सामने प्रकट करता है। आत्मप्रकाशन ही निबंध का प्रथम और अंतिम लक्ष्य है। आधुनिक निबंधों के जन्मदाता फ्रांस के **मौनतेन** माने गए हैं। निबंध की परिभाषा देते हुए उन्होंने लिखा है, **'निबंध विचारों, उद्धरणों एवं कथाओं का सम्मिश्रण है।'** अपनी बात को स्पष्ट करते हुए वे आगे लिखते हैं: **'अपने निबंधो का विषय स्वयं मैं हूँ। ये निबंध अपनी आत्मा को दूसरों तक पहुँचाने के प्रयत्नमात्र है। इनमें मेरे निजी विचार और कल्पनाओं के अतिरिक्त कोई नूतन खोज नहीं है।'**

यह परिभाषा निबंध की दो विशेषताओं की ओर संकेत करती है- (1) निबंध में निबंधकार स्वयं को अभिव्यक्त करता है तथा (2)यह पाठक से आत्मीयता स्थापित करता है, उसे शिक्षा या उपदेश नहीं देता ।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल भी इस सत्य को स्वीकार करते हैं कि निबंधकार की आत्माभिव्यक्ति ही निबंध की प्रमुख विशेषता है। उनके शब्दों में **'आधुनिक पाश्चात्य लक्षणों के अनुसार निबंध उसी को कहना चाहिए, जिसमें व्यक्तित्व अर्थात व्यक्तिगत विशेषता हो।'** कहने का तात्पर्य यह है कि निबंध में निबंधकार खुलकर पाठक के सामने आता है। कोई दुराव नहीं नहीं, किसी प्रकार का संकोच अथवा भय नहीं – वह जो कुछ अनुभव करता है, उसे अभिव्यक्त कर देता है। रागतत्त्व की प्रधानता एवं हृदय का आग्रह निबंध की विशिष्टता है। निबंध का सौन्दर्य है- प्रवाह। पाठक को निबंधकार भावधारा में अनायास प्रवाहित करता है। सघन और तीव्र अनुभूतियों का निबंध एन भावात्मक प्रकाशन होता है। भाव आकुल-व्याकुल होकर सहज ही धारा फूटती हो तो सीधे उछलती-कूदती, अनेक विचार-पत्थरों, चिंतन-कगारों से टकराती प्रयाग में आकर सरस्वती और यमुना के साथ मिलती हो।' 'यही कारण है कि निबंध के विषय की कोई सीमारेखा नहीं है। विश्व की किसी वस्तु को लक्ष्यकर निबंधरचना संभव है; क्योंकि विषय तो एक बहाना- भर है; मुख्य लक्ष्य निबंध के माध्यम से आत्मप्रकाशन है।'

निबंध मानसिक प्रतिक्रियाओं, भावनाओं एवं विचारों का सँवरा रूप है। बालमुकुंद गुप्त के निबंधों को लीजिए। उन्होंने राजनीतिक विषय अवश्य चुने हैं, किन्तु अपने व्यक्तित्व में उन्होंने विषय को घुला-मिला दिया है। पं॰ प्रतापनारायण मिश्र तथा सरदार पूर्णसिंह आदि श्रेष्ठ निबंधकारों ने ऐसा ही किया है। सच तो यह है कि निबंधकार जीवन के स्नैप्स (छोटे-छोटे चित्र) खींचता है। जीवन के किसी कोने में झाँकका वह जो कुछ पाता है और उसके मन में उसकी जो प्रतिक्रिया होती है, उसे ही वह निबंध के माध्यम से व्यक्त करता है और वह अपना सम्पूर्ण व्यक्तित्व ढाल देता है। वह किसी सिद्धांत या मत का प्रतिपादन नहीं करता, कोई सिद्धांत भी स्थिर नहीं करता, मनोनीत विषय को अपने व्यक्तित्व के रस में पागकर अभिव्यक्त करता है।

निबंध की विशेषताएँ

निबंध की चार प्रमुख विशेषताएँ हैं-

(1) व्यक्तित्व का प्रकाशन (2) संक्षिप्तता (3) एकसूत्रता और (4) अन्विति का प्रभाव।

1. निबंधकार का प्रथम लक्ष्य है-व्यक्तित्व का प्रकाशन। निबंध में निबंधकार अपने सहज स्वाभाविक रूप से पाठक के सामने प्रकट होता है। यह पाठकों से मित्र की तरह खुलकर सहज संलाप करता है। यही कारण है कि

मैदान की स्वच्छ हवा में कुछ देर टहलने से चित्त को जिस प्रसन्नता और उत्साह की प्राप्ति होती है, निबंध पढ़ने पर मन को वैसा ही आह्लाद होता है। अतः, निबंध की सर्वप्रथम विशेषता है- व्यक्तित्व का प्रकाशन।

2. निबंध की दूसरी विशेषता है- संक्षिप्तता। निबंध जितना छोटा होता है, जितना अधिक गठा होता है, उसमें उतनी ही सघन अनुभूतियाँ होती हैं और अनुभूतियों में गठाव-कसाव के कारण तीव्रता रहती है। फलतः निबंध का प्रभाव पाठक पर सर्वाधिक पड़ता है। निबंध की सफलता-श्रेष्ठता उसकी संक्षिप्तता है। शब्दों का व्यर्थ प्रयोग को निकृष्ट बनाता है।

3. श्रेष्ठ और सरल निबंध की तीसरी विशेषता है-एकसूत्रता। कुछ लोगों के विचारानुसार निबंध में क्रम अथवा व्यवस्था की आवश्यकता नहीं। ऐसा कहना ठीक नहीं। निबंध में निबंधकार स्वयं को अभिव्यक्त करता है; साथ ही उसमें भावों का आवेग भी रहता है। फिर भी, निबंध में वैयक्तिक विशेषता का यह अर्थ कदापि नहीं होता कि निबंधकार पागलों की तरह अर्थहीन , भावहीन प्रलाप कर, बल्कि सफल निबंधकार में चिंतन का प्रकाश रहता है। आचार्य शुक्ल के शब्दों में, " व्यक्तिगत विशेषता का मतलब यह नहीं है कि उसके प्रदर्शन के लिए विचारों की शृंखला राखी ही न जाय या जानबूझकर उसे जगह-जगह से तोड़ा जाय; भावों की विचित्रता दिखाने के लिए अर्थयोजना की जाय, जो अनुभूति के प्रकृत या लोकसामान्य स्वरूप से कोई संबंध ही न रखे, अथवा भाषा से सरकसवालों की-सी कसरतें या हठयोगियों के-से आसन कराये जाएँ, जिंका लक्ष्य तमाशा दिखाने के सिवा और कुछ न हो।"

4. निबंध की अंतिम विशेषता है – अन्विति का प्रभाव । " जिस प्रकार एक चित्र की अनेक असम्बद्ध रेखाएँ आपस में मिलकर एक सम्पूर्ण चित्रा बना पाती हैं अथवा एक माला के अनेक पुष्प एकसूत्रता में ग्रंथित होकर ही माला का सौंदर्य ग्रहण करते हैं, उसी प्रकार निबंध के प्रत्येक विचारचिंतन, प्रत्येक भाव तथा प्रत्येक आवेग आपस में अन्वित होकर संपूर्णता के प्रभाव की सृष्टि करते हैं।"

निबंध का शिल्पविधान

निबंध के लिए कोई एक शिल्पविधान निर्धारित नहीं किया जा सकता। निबंध साहित्य का एक स्वतंत्र अंग है। अतः, इसे नियमों से नहीं बाँधा जा सकता। पर सुगठित निबंध लिखने के लिए **तीन बातों पर** ध्यान देना चाहिए- **(1) विषय-निरूपण या भूमिका (2) व्याख्या तथा (3) निष्कर्ष।**

1° विद्यार्थी को अपने मत अथवा विचारों का निरूपण सर्वप्रथम करना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति अपने ढंग से विचारों का प्रतिपादन करता है। सबकी विचारधार तथा चिंतन-प्रणाली भिन्न होती है। हर व्यक्ति अपने दृष्टिकोण से अपने विषयों को ग्रहण करता है। अतएव, हर व्यक्ति के विचार की रीति भिन्न हुआ करती है। कोई प्राम्भ में ही अपने विचारों का निचोड़ एक-दो पंक्ति में रख देता है, कोई अपने विचारों का क्रमिक विभाजन करता है और कोई सूत्रशैली में अपनी बात कह डालता है। इस प्रकार , कथन के ढंग अनेक और भिन्न होते हैं। विद्यार्थियों को भूमिका के रूप में विषय का संक्षिप्त परिचय देना चाहिए। जिस दृष्टिकोण से निबंध लिखा जाए, उसी दृष्टिकोण से भूमिका भी लिखी जानी चाहिए। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से लिखे निबंध में विषय का संक्षिप्त परिचय भी उसी दृष्टिकोण से देना चाहिए। ऐतिहासिक तथा भावात्मक निबंधों के विषय में भी ऐसा ही करना चाहिए।

2° विश्लेषण निबंध का सार-अंश है। यहाँ विद्यार्थी को विषय का विश्लेषण कर समुचित रूप से उस पर प्रकाश डालना चाहिए। उस विषय को कई खंडों में बाँटना चाहिए और एक अनुच्छेद में एक ही खंड पर प्रकाश डालना चाहिए। बातों में सिलसिला होना चाहिए। जो बात पहले लिखी जाय उसे पीछे लिखने से निबंध का महत्त्व घट जाता है। इस अंश में दूसरों के अनुकूल मतों की पुष्टि और प्रतिकूल मतों का सहृदयतापूर्वक खंडन भी किया जा सकता है।

3॰ 'समाप्ति' या 'निष्कर्ष' में ऊपर कही गई बातों का सारांश दो-चार पंक्तियों में बहुत ही सुंदर ढंग से देना चाहिए। अंत इस तरह का हो कि पाठक को जान पड़े कि अब इससे अधिक कुछ नहीं कहा जा सकता। भावात्मक निबंध में भी लेखन अपनी रूचि के अनुसार समाप्तिवाक्य लिख सकता है, किन्तु प्रत्येक दशा में यह ध्यान रखना चाहिए कि समापतिवाक्य ऐसे हो कि निबंध के सौंदर्य और सरलता को बढ़ा दें, साथ ही स्थापित विचारों के पोषक भी हों।

निबंध के प्रकार

निबंध के **तीन** प्रकार हैं-**(1) भावात्मक (2) विचारात्मक तथा (3) वर्णनात्मक।**

भावात्मक निबंध में भाव की प्रधानता रहती है और **विचारात्मक निबंध** में विचार की। यहाँ 'प्रधानता' शब्द ध्यान देने योग्य है। कोई भी निबंधकार केवल भाव या केवल विचार के सहारे नहीं चलता। वह अपने साथ भाव और विचार दोनों लेकर चलता है। पर उसमें कभी भावपक्ष की प्रधानता रहती है और कभी विचारपक्ष की। भावपक्ष की प्रधानता रहने पर भावात्मक निबंध की रचना होती है और विचारपक्ष की प्रधानता रहने पर विचारात्मक निबंध की । कहने का तात्पर्य यह कि न तो भावात्मक निबंध मेँ बुद्धि की सर्वथा उपेक्षा रहती है और न विचारात्मक निबंध में हृदय की। जिस विचारात्मक निबंध में विचार की गंभीरता के साथ भाव की सरसता का समुचित समन्वय नहीं है, वह निबंध की कोटि में न आकर लेख या प्रबंध की कोटि में आता है। विचारात्मक निबंधों में निबंधकार ऐतिहासिक या वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विश्लेषण करता है, पर ऐतिहासिक या वैज्ञानिक की तरह वह विषय से तटस्थ नहीं रहता, बल्कि विषय के साथ अपने-आपको एकाकार कर देता है। जिस विचारात्मक निबंध में इस तत्त्व का अभाव है, वह निबंध की कोटि में नहीं आता। किसी वस्तु या स्थान आदि का परिचयात्मक वर्णन प्रस्तुत करने वाले निबंध 'वर्णनात्मक निबंध कहे जाते हैं। वर्णनात्मक निबंधों में किसी दृश्य, वस्तु, व्यक्ति, स्थान, मेले, प्राकृतिक,

विचारात्मक निबंध का आधार चिंतन है। निबंधकार अपने चिंतन के माध्यम से अपनी बात पाठकों तक पहुँचाता है। अपनी बुद्धि की पाठकों की बुद्धि से आत्मीयता स्थापित करना इस प्रकार के निबंधों का उद्देश्य है। भावात्मक निबंधों का मूलाधार आवेग है। हृदय से हृदय की आत्मीयता स्थापित करना इस प्रकार के निबंधों का लक्ष्य है।

द्वारा –
संतोष कुमार खरवाल
प्रशिक्षित स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय-2, जादुगोड़ा